Cosmos Multidisciplinary Research E-Journal
Online Available at www.cmrj.in
Recognized International Peer Reviewed Journal
Impact Factor 4.94
ISSN No. 2456-1665

# सुधा अरोडा के कथा साहित्य में नारी - विमर्श

**प्रा. डॉ. तडवी सैराज अन्वर**
संत ज्ञानेश्वर महाविद्यालय,
सोयगांव,जि. औरंगाबाद.
Email :- sairaj.tadvi@gmail.com
Mob.9975313437

साहित्य और समाज का बहुत निकट का संबंध है | कहानी आज एक बहुप्रलित तथा लोकप्रिय विधा है | समय के साथ - साथ कहानी के उद्देश्य और कहानी लेखन विषयों में भी बदलाव होता रहा है | प्रेमचंद के समय से ही प्रेमचंद जी ने कथा साहित्य को 'मनोरंजन' के स्तर से ऊपर उठाकर जीवन के साथ जोडने का काम किया | साहित्य समाज का दर्पण होता है | साहित्य में समाज की समस्याओं, संवालों, और कारणों, समाधानों को बडी सूक्ष्मता के साथ उजागर किया जाता है | सामाजिक यथार्थ के चित्रण की परम्परा प्रेमचंद युग से आज के वर्तमान समय तक चली आ रही है |

प्राचीन काल से ही नारी का समाज में महत्वपूर्ण स्थान रहा है | प्राचीन काल से ही नारी साहित्य का केंद्र रही है | प्राचीन समय से नारी अपना महत्व सिध्द करती आयी है | प्राचीन समय से ही समाज व्यवस्था रुपी रथ के दो पहिए थे पुरुष और स्त्री है | दोनों को ही समान महत्व एवं दायित्व प्रस्थापीत था | नारी का समाज में विशेष महत्व रहा है नारी के बीना सामाजिक ढाचे की परीकल्पना पुरी नहीं हो सकती | नारी प्राचीन काल से ही समाज, संस्कृति के निर्माण मे नारी का महत्वपूर्ण योगदान रहा है | 'नारी' संसार को एक वरदान के रुप में प्राप्त है क्योंकि नारी के बीना समाज, संस्कृति का संरक्षण अशक्य है |

परिवर्तन प्रकृति का नियम है, मनुष्य जीवन भी परिवर्तन शील रहा है | मनुष्य जीवन में संघर्ष निरंतर चलती प्रक्रिया रही है, जिसेक परिणाम स्वरुप सामाजिक, मानसिकता, जीवनमूल्य में समय-समय पर परिवर्तन होते है | नारी जीवन में भी परिवर्तन होता रहा है | प्राचीन समय में समाज में नारी को पूरा आदर प्राप्त था, नारी को वसुंधरा भी कहा जाता था, प्राचीन वैदिक काल में नारी के श्रेष्ठता और नेतृत्व के प्रमाण भी मिलते है | लेकीन समय के साथ - साथ नारी की स्थिति में भी परिवर्तन होता दिखाई देती है | वर्तमान समय में नारी सभी क्षेत्रों में अपनी सिध्दता प्रस्तापीत करणे प्रयास कर रही है | नारी प्राचीन समय से पुरष वर्ग का हमेशा ही साथ देती रही है | अदिकाल से आजतक नारी का जीवन अत्यंत संघर्षषील रहा है | आज भी अनेक समस्याएँ है जो नारी का पिछा नहीं छोडती | भारतीय समाज भले ही वैश्वीकरण की ओर अग्रसर हो गया है, लेकिन नारी की स्थिती में कोई खास सुधार नही हुआ है | स्वतंत्रता के बाद भी नारियों के शारीरीक शोषण,अन्याय,अत्याचार, में बदलाव नहीं हुआ | शोषण और अत्याचार के सिर्फ स्वरुप बदले है | समाज ने नारी के लिए सामाजिक मर्यादाओं की जो सिमा रेखा खीची जै, वह पुरुष के लिए बाध्यकारी नहीं है | आजकल नारियों ने पीडा एवं उत्पीडन को नियती मानकर सहलेती है | जैसे युग में परिवर्तन होता गया है | नारी के प्रति सामाजिक मानसिका में भी परिवर्तन होता गया है | पुरुष प्रधान समाज में नारी की पुजा भी होती रही है वही समाज नारी को मात्र भोग विलास का साधन मानकर उसका शोषण भी करता रहा है |

समकालीन महिला लेखिकाओं में सुधा अरोडा जी एक सक्षक्त हस्ताक्षर के रुप में चर्चित रही है | सुधा अरोडा जी ने वर्तमान समय के सामाजिक परिस्थतीयों को अपने साहित्य में प्रस्तुत किया है | किसी भी साहित्यकार के कृतित्व को उसके जीवनानुभवों से पृथक नहीं ऑका जा सकता | सुधा अरोडा जी बहुमुखी प्रतिभा संपन्न साहित्यकार है जिन्होंने जो देखा, महसुस किया उस सामाजिक यथार्थ को सुक्ष्मता से अपने साहित्य में प्रस्तुत किया है | सुधा अरोडा जी ने अपने साहित्य में नारी केंद्र

स्थान में रखा है | नारी से सम्बन्धित सामाजिक, साम्प्रदायिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, पहलुओं को यथार्थता के साथ अपने साहित्य में पुस्तुत किया है |

नारी की अनेक समस्याएँ है, जो नारी का सदियों से पीछा नही छोड रही है | विवाह, उत्पीडन, शोषण , अन्याय, विधवा विवाह, यौन समस्या , आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, अस्तित्व, धार्मिक शोषण, भेदभाव, नौकरी, शिक्षा जैसी अनेक समस्याओं ने नारी को लाचार बना रखा है | सुधा अरोडा जी ने नारी को केंद्र स्थान में रखकर अपनी रचनाओं का निर्माण किया है | नारी जीवन से सम्बन्धित सभी समस्याओं को यथार्थ रुप से समाज के सामने प्रस्तुत किया है | डॉ. नरेंद्र सिंह ने सुध्दा अरोडा जी के कहानियों के संदर्भ में लिखा है | "सुधा अरोडा ने आधुनिक नारी की विभिन्न समस्याओं को नये कोण से स्पर्श कर नयी दिशा देने का प्रयास किया है किन्तु वे यह स्वीकारती है कि आज की नारी के संदर्भ में सम्बन्ध आयाम परिवर्तीत हुए हैं, पर वे परिवर्तन भी उतने ही भयानक है जितने की रुढ संस्कार जिन्हें तोडने और विश्रखलित करने की अकुलाहट में नारियाँ गतिशील हुई थी |"[1] सुधा अरोडा ने अपने लेखन के द्वारा नारी जीवन के आंतरिक और बाह्य जीवन को यथार्थ के साथ समाज के सामने प्रस्तुत किया है | सुधा अरोडा जी नारी शोषण, अत्याचार, असमानता के विरुध्द आवाज उठाई है |

वर्तमान समय में नारी पर अनेक अन्याय, अत्याचार होत है | 'बोलो भ्रष्टाचार की जय' इस कहानी के माध्यम से सुधा अरोडा जी ने समाज के सामने रखने का प्रयास किया है | उच्च वर्ग, के लोक निचले लोगों पर अन्याय, उत्याचार कर उनका शोषण करते रहे है और खास कर नारियों के | "एक महिने के अन्दर ही एक्शन का नतीजा सामने था मेरे हाथ में तबादले के आदेश थे और मिस्टर मनिहार के हाथ में प्रमोशन के कागज वह जनरल मॅनेजर के पद से उपर उठाकर अब कंम्पनी के मॅनेजिंग डायरेक्टर हो गए थे "[2] नारी ने जब भी उपर उठने का , शोषण, अन्याय का विरोध करणे का प्रयास किया है उसका शोषण ही न होता रहा है | नारियों का शोषण सिर्फ मात्र आर्थिक शोषण ही नही होता नारियों का शारीरिक शोषण के विविध रुपों को अपने साहित्य में उकेश है | नारी का शोषण आज घर और घर के बाहर दोनों तरफ होता दिखाई देता है | 'तीसरी बेटी के नाम ये ठंडे सुखे बेजान शब्द' इस कहानी में साधुओं द्वारा सुनयना का शारीरिक शोषण का चित्रण सुध्दा अरोडा जी ने किया है | धर्म की आड में अनेक अनुचीत कार्य होते रहते है| "मॉ, यह साधुओं का जत्था अपने घर श्राध्द खाने आया था, उन में से एक ने मुझे जबरदस्ती पकड लिया | वह ... वह भला आदमी नहीं है मॉ | अभी तो तुने दस भी पुरे नहीं किए थे | तेरी छातियॉ ठिक से उभरी ही नहीं थी और एक गेरुए वस्त्रधारी ने उन्हें रौद डाला था | में गुस्से पागल हो रही थी, पर तेरी दादी ने मुझे रोक लिया था, यह लडकी जात है, तमाशा मत कर ! आगे से घर में कोई साधु नहीं आएगा | इस बार हादसे को पी जा |" [3] धर्म, परंपरा, अंधश्रध्दा, इज्जत के नाम पर नारी पर प्राचीन समय से ही नारी का शारीरीक शोषण होता आया है | नारी को प्रतिष्ठा, गरिमा, इज्जत, आबरु, ह्या , शर्म, यातना, आदि रखने की पुरी जिम्मेदारी रखने एक नारी को ही रखना होता है |

सुध्दा अरोडा नारी संपुर्ण जीवन के विभिन्न विषयों को लेखन किया है | नारी विभिन्न समस्याओं को समाज के समुख प्रस्तुत किया है | प्रीति अग्राल ने सुध्दा अरोडा जी के साहित्य के नाहरी सम्बध में कहा है | "सुधा अरोडा की वैचारिकी स्त्री विमर्श के दायरे को अपेक्षित विस्तार प्रदान करती है ऐसे तमाम मुद्दों जैसे स्त्री धर्म,स्त्री व उनके कानुनी अधिकार स्त्री व राजनीति स्त्री व उनकी आर्थिक स्वायत्ता, स्त्री व लेखन की समस्याएँ मीडीया में स्त्री आदि पर उनकी लेखनी प्रकाश डालती चलती है जिन्हें अब तक साहित्य में स्त्री विमर्श के दायरे से बाहर रखा गया था |"[4] नारी के अस्तित्व को प्राथमिकता देने का कार्य सुध्दा

अरोडा के साहित्य ने किया है | नारी सभी महत्वपुर्ण मुद्दो और प्रश्नों को बेबाक राय के साथ और विचारों के साथ समाज के सम्मुख प्रस्तुत किया है |

वर्तमान समय में समाज में धर्म, रुढी,परंपरा के नाम पर सडी गली परंम्पराओं का बढावा देकर इस समाज में फैलाकर इन्सान को एक दुसरे से अलग करने का प्रयास होता रहा है | सुध्दा अरोडा जी ने इस सामाजिक यथार्थ को 'जानकीनामा' इस कहानी में प्रस्तुत किया है | "तुम्हें अपने धरम का जरा भी ख्याल नहीं, उसे रसोई में भेज दिया, आखिर है तो वह जुलेखा ही, धरम भ्रष्ट नहीं हुआ तुम्हारा |"[5] समाज में धर्म, जाती ऊंच नीच का हमेशा ही बोलबाल रहा है | धर्म के नाम पर इन्सान को बाटा जात रहा है | वर्तमान समाज भी इससे अछुता नही है | आधुनिक समाज व्यवस्था में नारी में जो परिवर्तन हुए है, उसमें नारी का कामकाजी रुप में उभरकर सामने आया है | परिवार की आर्थिक स्थिती, बच्चों का पालन-पोषण, जीवन स्तर, बेरोजगारी, अर्थ के कारण नारी को घर की चाहरदीवारी से बाहर निकल आयी है | नारी के कामकाजी जीवन, व्यवस्था के कारण तनाव भी निर्माण हुआ है | सुधा अरोडा ने लिखा है, "कामकाजी दपति की समस्याएँ अधिका गहरी है घर को सही रुप से चलाने में कितना योगदान पति का हो, कितना पत्नी का, इस पर मतभेद एक बडी समस्या में कितना योगदान पति का हो, कितना पत्नी का, इस पर मतभेद एक बडी समस्या में बदल सकत है | पति घर पहले पहुॅच जाए और पत्नी तब तक न पहुॅच पाए तो भी बवाल खडा होने की पुरी संभावना है |"[6]

अर्थ का समाज में महत्वपुर्ण स्थान रहा है | आधुनिक समाज में नारी आत्मनिर्भर होने का प्रयास कर रही है | नारी प्राचीन समय में आर्थीक समय में आर्थिक रुप से पुरुष पर आश्रित होने के कारण हेय ही मानी जाती रही है | अर्थ के कारण परिवार, समाज में तनावग्रस्त वातावरण का यथार्थ चित्रण 'दमनचक्र' कहानी में सुधा अरोडा जी ने किया है | "अपने - अपने घरों से नही, अपनी - अपनी कमाई से सिर्फ मेरी कमाई से यह घर कितनी अच्छी तरह चल रहा है, शायद तुझे दिखाई नहीं देता | मुझे कमाकर हम सबको खिलाना चाहिए | तु उलटे मुझसे पचीस रुपये मांग रहा है |"[7] नारी पुरुष की तुलना में अधिक सक्षम है | नारी अर्थ प्राप्त कर घर और घर के बाहर की जिम्मेदारी बखुभी निभा रही है |

शिक्षा के परिणाम स्वरुप नारी अपने अस्तित्व और अधिकारों के प्रति जागृत हुई है | अपने 'स्व' के आस्तित्व के लिए लढना चाहती है | तेजिन्दर कौर ने सुध्दा अरोडा जी के कहानियों के विषय में लिखा है | "अपने अधिकारों की प्राप्ती के प्रति सदैव सजग और संघर्षरत रहने की प्रेरणा देती है | अंधेरे में भटके हुए अपने अस्तित्व को तलाशती नारी आज अनेक क्षेत्रों में पहचानने में समर्थ हो पाई है, इसका चित्रण करके सुध्दा अरोडा ने यह साबित कर दिया है कि अनका आपसी जीवन और साहित्य नारी के सम्पुर्ण जीवन की झलक प्रस्तुत करता हुआ उसे हर कदम पर प्रेरित कर रहा है |"[8] नारी त्याग का प्रतीक मानी जाती है | वैदिक काल में नारी को देवी के रुप में पुजा जाता था, लेकिन इसके बावजुद समाज में लडका और लडहिकयों में भेदभाव का चित्र दिखाई देता है | 'तीसरी बेटी के नाम ये ठंडे, सुखे बेजान शब्द' इस कहानी में इसका यथार्थ चित्रण है | "बुआ, ऐसे मत बोल यह मेरी बेटी भी और बेटा भी है | बेटा होता तो भी इतनी ही तकलीफ देकर इतना ही खुन बहाकर पैदा होता ! बेटी तो बेटी रहती है धिये, इसे बेटा बनाने की जुरत न करना बुआ क समझदार व्यंग्य भरी हसी हॅसकर चल दी थी |"[9] हमारे समाज में लडकी शादी - ब्याह , दहेज, शिक्षा, विवाह के कारण माता - पिता के लिए बोझ एवं चिंता का विषय है | वर्तमान समय में भी समाज लडकियों को नाकारता ही रहा है यही यथार्थ है | नारी के विवाह के समय दहेज प्रथा सबसे बडी और घृणा निर्माण करनेवाली समस्या है | यह समस्या दिनोंदिन निरंतर विस्तार पा रही है | दहेज के कारण अनेक लडकियों की हत्या होती रही है|

सुध्दा अरोडा जी ने दहेज को लेकर लिखा है | "जिन घरों में दहेज को लेकर स्त्रिया जलाई जाती है, वे ज्यादातर व्यापारी क्योंकि बंधुआ मजदुर उसके लिए किमत रखता है, लेकिन ज्यो व्यापारी वर्ग है, वह विवाह को भी एक व्यापार समझाता है |"[10]

स्वतंत्रता के पश्चात महानगरों की तेजी से वृध्दी हुई है और तेजी से आर्थिक वैषम्य भी बढा है | जिससे समाज में घुटन, तनाव,एवं कुण्ठा का दबदबा बढता चला गया है | यह महानगरीय जीवन की उपज है | मनुष्य अपना अस्तित्व बनाये रखने के लिए संघर्ष कर रहा है | इस विडम्बना कों सुध्दा अरोडा ने सुक्ष्मता के साथ चित्रित कर यथार्थता के साथ प्रस्तुत किया है | "मम्मी जाओ, ऑफीस पापा जाओं, ऑफिस, हम भी जाएँगी, हमारे जुते दो मम्मी ! हमको मत पकडो ! लडकी आया ताराबाई के यहॉ जाने की बात कहती है और बेहोश हो जाती है |"[11] सुध्दा अरोडा जी ने नारी जीवन के बाह्य एवं अंतरंग जीवन का विश्लेषण कर सामाजिक यथार्थ प्रस्तुत किया है | पूँजीवादी अर्थ व्यवस्था में जीनेवाली सामान्य नारी के प्राण घुटन, तनाव, एवं पीडा से छटपटा रही है | मजबुरी और विवशता के कारण व्यक्ति में अनेक विकृतियां उत्पन्न हो रही है यही सामाजिक यथार्थ है |

सुधा अरोडा जी ने अधिकांश कहानियों मे नारी से जुडी समस्याओं को केंद्र में रखा है | दबी, कुचती, अपमानित, प्रताडित, सुडी गली विसंगतियों को समाज के सामने रखा है | डॉ. रघुवर दयाल वाष्णेय ने सुधा अरोडा की कहानियो के संदर्भ में लिखा है | "सुध्दा के पास अनुभूति भी है और अनुभूति को अभिव्यक्त करने की क्षमता भी | यथार्थ की पीडा नारी जीवन का अस्तित्वगत गहराई विसंगती और अनुभूति की गहराई इनकी कहानियों मे उभकर आई है |"[12]

सराशंत: नारी चरित्र, अस्तित्व आधुनिक नारी जीवन की विसंगतीयां, नैराश्य, महानगरीय समस्या, शिशु पालन, एकल परिवार, कामकाजी नारी, आधुनिक समाज में लुप्त हो रहे मूल्य, भयावह शोषण का भयावह चित्रण प्रस्तुत किया है | नारी में सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक आर्थिक स्थिती में चेतना जगाने का प्रयास किया है | नारी का दोहरा शोषण हो रहा है | नारी के जीवन में तनाव, अजनबीपन अंतद्वन्द है | धर्म संस्कृति रिती - रिवाज , संस्कार, प्रस्था के नाम पर नारी को चाहर दीवारी में रखा जाता रहा है | नारी अर्थ एवं अपने अस्तित्व के प्रति सजग होती दिखाई देने लंगी है | समाज में विवाह, दहेज, धर्म , संस्कार जैसी अनिष्ठ प्रथाएं अभी भी स्थित है | नारी जीवन के विविध रुपों को सुध्दा आरोडा जी ने उकेरा है | नारी के समाज जीवन में दो रुपों का यथार्थ दर्शन अपने साहित्य में प्रस्तुत किया है |

**संदर्भ ग्रंथ :-**

१. समकालीन हिंदी का सामाजिक सरोकार - डॉ. नरेंद्रनाथ सिंह
२. २१ श्रेष्ठ कहानियॉ - सुधा अरोडा
३. २१ श्रेष्ठ कहानियॉ - सुधा अरोडा
४. स्त्री मुक्ति के प्रश्न और समकालीन विमर्श - सं.डॉ अल्पनासिंह
५. २१ श्रेष्ठ कहानियॉ - सुधा अरोडा
६. एक औरत की नोटबुक - सुधा अरोडा
७. १० प्रतिनिधी कहानियॉ - सुधा अरोडा
८. स्त्री सशक्तीकरण विविध परिप्रेक्ष्य : डॉ. विनोद कालरा
९. अन्नपुर्णा मंडल की आखिरी चिठ्ठी - सुधा अरोडा.
१०. समकालीन हिंदी कहानी - रामजी तिवारी
११. २१ श्रेष्ठ कहानियां - सुधा अरोडा
१२. स्त्री सशस्त्रीकरण विविध परिप्रक्ष्य - डॉ. विनोद कालरा.